पंजीयन क्र. 2672 दिनांक 7.3.72 दूरभाष / फैक्स क्र. 0761.2426110

ljLorh f'k{kk ifj"kn e/;izns'k
egkdks'ky izkUr

ujflag efUnj ds ihNs] 'kkL=h fczt] tcyiqj&482001
web. : www.vidhyabhartimahakoshal.org
E-mail : parishadjbp@gmail.com

ifji= Ø- 1@2017&18 **fnukad% 01-07-2017**

izfr]

Jheku~ O;oLFkkid@izkpk;Z@iz/kkukpk;Z
ljLorh f'k'kq efUnj@mPp-ek/;-fo|ky;
egkdks'ky izkar

vknj.kh; c/kqoj]

lknj ueLdkj

प्रभु कृपा से सान्नद होंगे। मध्यक्षेत्र में शिशु मंदिर योजना का शुभारंभ रीवा में सन् 1959 में हुआ था। शनैःशनैः सम्पूर्ण मध्यक्षेत्र में योजना बट वृक्ष का स्वरूप ले चुकी है। इस महा यज्ञ में अनेक साधकों का जीवन तिल तिल कर समर्पित हुआ है। कार्य का विकास एवं विस्तार करते समय अनेक संकट एवं चुनौतियों का समाधान हमने कुशलता पूर्वक कर योजना का विस्तार किया है। वरिष्ठ अधिकारी एवं हम सभी की इच्छा है कि हमारे कार्य का व्यवस्थित अभिलेख तथ्यों के आधार पर निर्माण हो तथा हमारे प्रेरणा स्त्रोत अनेक कार्यकर्ता इस योजना में समर्पण भाव से संलग्न रहे उनकी स्मृतियां एवं साक्षात्कार का संग्रह हो। यहाँ विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिये सुझाव है कि सत्र 2017–18 में अपने विद्यालय की हस्तलिखित / मुद्रित पत्रिका तैयार संलग्न पत्रक के बिन्दुओं को आधार बनाकर तैयार करें जिसका विषय हो ****f'k'kq efUnj dh fodkl ;k=k**** ।

०– विद्यालयीन हस्तलिखित पत्रिका के लिए आधार बिन्दु –

1. स्थापना सम्बंधी जानकारी।
2. प्रारम्भ के समय के प्रमुख कार्यकर्ताओं का जीवन परिचय, छायाचित्र, बौद्धिक सार, प्रवास के समय के संस्मरण, प्रसंग उनके स्थान का पता।
3. कार्य में विशेष योगदान देने वाले कार्यकर्ताओं का जीवन परिचय।
4. स्थापना से अभी तक अधिकारियों की कार्यकाल के अनुसार चार्ट।
5. विभिन्न स्थानों पर कार्य कैसे प्रारम्भ हुआ।
6. समाचार पत्रों में एवं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में छपी सामग्री।
7. प्रकाशित साहित्य।
8. लीगल डाक्यूमेंट से प्रत्येक जानकारी का मिलान करना।

9. कार्य एवं कार्यक्रम सम्बंधी छपे लेख।
10. अपनी छपने वाली पत्रिकाएँ।
11. विभिन्न चल चित्र, सी.डी. कैसिट।
12. मुद्रित सामग्री।
13. विशेष कार्यक्रम समारोह।
14. विख्यात विभूतियों की अपने कार्यक्रमों में उपस्थिति।
15. सामाजिक परिवर्तन/सामाजिक सरोकार/सामाजिक समरसता/संस्कार क्षम वातावरण के विशेष प्रसंग कार्यक्रम उदाहरण।
16. बड़े प्रकल्प की जानकारी।
17. अपने कार्य संबंधी विख्यात हस्तियों द्वारा कहे गए वाक्य संदर्भ प्रमाण सहित।
18. प्रांतीय, क्षेत्रीय बैठक प्रतिवेदन वृत्त।
19. कार्य विस्तार का तुलनात्मक वृत्त–विद्यालय, छात्र, आचार्य, पूर्णकालिक, प्रचारक, प्रवासी, कार्यकर्ताओं की उपलब्धियाँ।
20. आधारभूत विषयों की स्थापना।
21. संकट/समाधान।
22. वनवासी, ग्रामीण, नगरीय शिक्षा का उद्‌गम, गतिविधियाँ प्रकल्पों के आयाम।
23. केन्द्रीय अधिकारी प्रवास।
24. भामाशाह जिन्होंने भूमि या स्थायी सम्पत्ति हेतु बड़ी राशि दान में दी हो।
25. स्मृतियां एवं साक्षात्कार।

0– साक्षात्कार जिनका लिया जाए, कतिपय–बिन्दु –

½1½ 0;fDRkRo ½2½ dfrRo

1. व्यक्तित्व–जन्म पारिवारिक पृष्ठ भूमि स्थिति परिस्थिति शिक्षा रुचि/अरुचि।
2. कृतित्व–कर्मक्षेत्र में आने की प्रेरणा किससे! क्यों आए–लक्ष्य।
3. प्रेरणा पुरुष आपके कौन थे क्यों?
4. प्रारम्भ में क्या सोचा अब क्या चिन्तन।
5. क्या–क्या दायित्व एवं कार्य किए।
6. आने वाली चुनौतियाँ का कैसे उनका समाधान किया।
7. किस–किस से सम्पर्क आया उनसे क्या–क्या सीखा।
8. उनके साथ कार्य करते हुए आए अनुभव।
9. प्रवास के अनुभव।
10. प्रकल्पों के अनुभव।
11. कार्य करते हुए विधि निषेध।
12. अब पीछे मुड़कर देखते है। तो क्या–क्या लगता है।
13. आगामी पीढ़ी के कार्यकर्ताओं के विषय में क्या विचार है।
14. अपने अनुभव से उनके लिए कोई संदेश।

vkyksd %& जिस व्यक्ति का हम साक्षात्कार लेने जा रहे हैं। उनके बारे में अध्ययन करके जाना अपेक्षित है।

0– संस्कृति कलापर्व कार्यशाला–

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान द्वारा निर्धारित योजना अनुसार अपने–अपने जिले में भली–भाँति कार्यशाला आयोजन के माध्यम से कला एवं संस्कृति की दो दिवसीय कार्यशाला के माध्यम से विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति के संरक्षण, संवर्द्धन की प्रेरणा जगाने का सफल प्रयास किया। नैतिक मूल्यों की स्थापना विषय की कार्यशाला के माध्यम से विद्यार्थियों में सद्गुणो का विकास हुआ है। वैज्ञानिक सोच का विकास विषय की कार्यशालाओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों में अब यह जानने की जिज्ञासा जाग्रत हुई है कि जो कुछ भी देखते हैं, वह कैसे और क्यों है। उनका जिज्ञासा भाव प्रबल हुआ है। इन सबके साथ–साथ योग एवं शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति सभी विद्यार्थी/प्रतिभागी सजग हुए हैं। इसके अनुवर्तन में वर्तमान **l= 2017&18 e Hkh pkjk fo"k; dh dk;'kkyk vk dk vk;kt u iR;d fty e fd;k tkoxkA**

1. कार्यशाला आयोजन के विषय –
   (क) सांस्कृतिक मूल्यों के विकास हेतु संगीत, लोक संस्कृति, लोक कला, नृत्य, नाटक, निबंध लेखन पर दो **fnolh;** कार्यशाला।
   (ख) भारतीय नैतिक तथा जीवन मूल्यों के विकास हेतु **,d fnolh;** कार्यशाला।
   (ग) 21वीं शताब्दी में विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों के प्रदर्शन तथा छात्रों में वैज्ञानिक अभिरुचि उत्पन्न करने हेतु **,d fnolh;** कार्यशाला।
   (घ) योग एवं स्वस्थ मानव जीवन विषय पर **,d fnolh;** कार्यशाला।
2. कार्यशालाओं के आयोजन हेतु स्थानीय स्तर पर संसाधन जुटाकर कार्यशाला करें। केन्द्र से आर्थिक सहयोग नहीं भेजा जाएगा।
3. कार्यशालाओं का आयोजन और व्यापक रूप में किया जा सके, अतः न्यूनतम प्रतिभागी संख्या की बाध्यता नहीं है किन्तु अधिकतम प्रतिभागियों एवं आसपास के सभी विद्यालयों की सहभागिता हो, इसके लिए योजनापूर्वक प्रयास करें।
4. कार्यशाला में भाग लेने वाले समस्त प्रतिभागियों एवं प्रशिक्षकों का नाम, मोबाइल नंबर और ई–मेल कुरुक्षेत्र कार्यालय को अवश्य भेजें।
5. कार्यशाला के समस्त प्रतिभागियों, स्रोत–व्यक्तियों/प्रशिक्षकों, संयोजकों के लिए प्रमाण पत्र केन्द्र द्वारा उपलब्ध कराए जाएंगे।
6. कार्यशाला को कार्य स्वरूप में ही आयोजित करना अपेक्षित है। किसी भी रूप में यह कार्यक्रम मात्र न बने, इसका विशेष ध्यान रखा जाए।

0– देवपुत्र पत्रिका –

हिन्दी बाल साहित्य जगत में देवपुत्र (सचित्र बहुरंगी) बाल मासिक विगत 36 वर्षों से बालमनों को आलोकित कर रही है।

अपने विद्यालय में कक्षा तृतीय से अष्टम तक अध्ययनरत भैया–बहिनों के लिए यह पत्रिका अनिवार्य करें। इसलिए जुलाई माह की शुल्क के साथ ही देवपुत्र पत्रिका की सदस्यता शुल्क रु. 130/– वार्षिक जमा कराकर देवपुत्र कार्यालय को प्रेषित कर इस कार्यालय को सूचित करें।

0– ''प्रेरणा पथ'' –

प्रेरणा पत्रिका अब ****ijk.kk iFk**** के नाम से हम सभी के बीच पहुँचेगी। यह पत्रिका भैया–बहिनों की साहित्य सृजन क्षमता के विकास में सहायक है तथा रचनात्मक गतिविधियों, सामान्य ज्ञान और शब्द भंडार की वृद्धि, साहित्यिक प्रतिभा का विकास और सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा में सहयोगी है। यह पत्रिका अब नवीनतम शैक्षिक मनोबोध के साथ पूर्ण ****cgjxh i"Bk**** में प्रकाशित होगी अतएव ''प्रेरणा पथ'' पत्रिका की सदस्य संख्या में वृद्धि कर सहयोग प्रदान करें। वार्षिक सदस्यता शुल्क 120/– प्रति रहेगा।

कक्षा नवम् से द्वादश तक अध्ययनरत भैया–बहिनों को इसका सदस्य अनिवार्य रूप से बनावें।

0– संस्कार केन्द्र –

विद्यालय को सामाजिक सरोकार सेवा एवं समरसता जैसे विषयों से जोड़ने के लिए संस्कार केन्द्रों की बड़ी भूमिका रहती है। इसलिए अपने ग्राम–नगर की सेवा बस्ती में संस्कार केन्द्र अवश्य प्रारंभ करें। सभी विद्यालय संस्कार केन्द्र युक्त हों ऐसी योजना है।

संस्कार केन्द्रों के गुणात्मक विकास की दृष्टि से अग्रगामी योजना निम्नानुसार है–

1. सभी केन्द्रों में संयोजक मण्डल का गठन करना।
2. संस्कार केन्द्रों के भैया–बहिनों का जिला सम्मेलन करना।
3. संयोजक मण्डल की द्विमासिक आवर्ती बैठक करना।
4. संकुल स्तर पर केन्द्र संचालन करने वाले कार्यकर्ताओं की द्विमासिक आवर्ती बैठक करना।
5. बस्ती में सम्पर्क योजना।
6. संस्कार केन्द्र के वार्षिकोत्सव का आयोजन करना।
7. संस्कार केन्द्र दर्शन की योजना करना (भैया/बहिन, आचार्य, समिति एवं अन्य अधिकारी)

0– पाञ्चजन्य– (साप्ताहिक) –

पाञ्चजन्य देश और समाज की ज्वलंत समस्याओं एवं समसामयिक विषयों को समाज के सामने सही सन्दर्भों के साथ उजागर करने एवं अपनी बात को दृढ़ता के साथ रखने वाला वैचारिक पत्र है। इसकी प्रसार संख्या बढ़ाने में अपना योगदान अवश्य हो।

अपने विद्यालय के माध्यम से अधिकाधिक सदस्य बनें, इसके लिए विद्यालय के प्रचार प्रमुख को इसका दायित्व दिया जा सकता है।

पाञ्चजन्य की वार्षिक सदस्यता शुल्क 625/– प्रति सदस्य है किन्तु 10 या इससे अधिक प्रतियाँ मंगाने पर वार्षिक सदस्यता शुल्क 500/– प्रति सदस्य रहेगा।

पता – भारत प्रकाशन (दिल्ली) लिमिटेड, संस्कृति भवन, 2322, लक्ष्मी नारायण गली, पहाड़गंज, नई दिल्ली ,110055

बैंक खाता क्र0 1502002100051122

पंजाब नेशनल बैंक – शाखा पहाड़गंज,नई दिल्ली

आई.एफ.एस.सी. कोड – PUNB-0013000

आपकी योजना से पाञ्चजन्य की सदस्य संख्या कितनी है इसकी जानकारी प्रांत कार्यालय को दें।

¼ MkW0 lrh"k vof/k;k ½
प्रादेशिक सचिव